भाकृअनुप
ICAR

सत्यमेव जयते
Department of Science
& Technology
Government of India

भा.च.चा.अ.सं.
IGFRI

पशुओं के बाह्य परजीवी और अन्तःपरजीवी कीटाणु

संकलनकर्ता :
साधना पाण्डेय
आर.के. वर्मा
के.के. सिंह
एस.आर. कांटवा
खेमचन्द
सचेन्द्र त्रिपाठी

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
झाँसी-284003 (उ.प्र.)

पशुओं के बाह्य परजीवी और अन्तःपरजीवी कीटाणु

परजीवी जैसे फीताकृमि, यकृत कृमि, गोल कृमि, किल्ली, जूँ इत्यादि पशु के शरीर के अन्दर या शरीर पर रहकर पशु से अपना भोजन ग्रहण करते हैं जिससे पशु के शरीर में आवश्यक तत्वों जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन इत्यादि एवं खून की कमी हो जाती है जिससे पशु बीमार पड़ जाता है एवं पशु के उत्पादन में कमी आती है और वह कमजोर होकर मर जाता है।

परजीवी कीटाणु दो प्रकार के होते है–

(i) **अन्तः परजीवी** – ये परजीवी पशु के शरीर के अन्दर रहते है जैसे गोलकृमि, फीताकृमि, यकृत कृमि आदि।

(ii) **बाह्य परजीवी** – ये परजीवी पशु के शरीर पर रहते हैं जैसे किल्ली, जूँ इत्यादि।

परजीवी द्वारा पशु को हानि पहुँचाने की विधि :

1. कुछ परजीवी पशु का भोजन ग्रहण करते हैं जैसे गोलकृमि, फीताकृमि, यकृत कृमि।
2. कुछ परजीवी, जैसे जूँ, किल्ली इत्यादि पशु का खून एवं लसीका चूसकर अपना भरण पोषण करते हैं।
3. **छूत की बीमारी फैलाना** – कुछ परजीवी जैसे किल्ली, बीमारी फैलाने वाले जीवाणु एवं विषाणुओं को पशु के शरीर में प्रवेश कराकर रोगों को फैलाते है। थाइलेरियासिस एवं बबेसियोसिस बीमारियाँ किल्लियों के माध्यम से गाय व भैसों में फैलती है।
4. **जहरीले एवं विषैले पदार्थों का उत्सर्जन** – कुछ परजीवी जैसे आमाशय में पाये जाने वाले कृमि कुछ जहरीले पदार्थों को निकालते हैं जो कि पोषी पशु के लिये हानिकारक होते हैं।
5. **यांत्रिक रूकावट** – कुछ परजीवी जैसे फीताकृमि पशु की आंत में अधिक होने के कारण यांत्रिक रूकावट पैदा करते हैं जिससे आँत की कार्यप्रणाली में बाधा आती है। यकृत कृमि, पित्त नली में यांत्रिक रूकावट करते हैं जिससे उसकी कार्यप्रणाली में बाधा आती है।
6. **ऊत्तकों को नुकसान पहुंचाना** – कुछ परजीवी पशु की आंत के ऊत्तक में अन्दर प्रवेश कर इसमें तोड़–फोड़ कर नुकसान पहुँचाते है।

पशुओं के मध्य रोग फैलने की विधि :

परजीवी से होने वाली बीमारियाँ सामान्यतया बीमार पशु से स्वस्थ पशु में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्पर्क के कारण फैलती हैं। अन्तः परजीवी मुख्यतः भोजन या पानी के माध्यम से एवं बाह्य परजीवी एक पशु से दूसरे पशु के सम्पर्क में रहने से एक दूसरे के शरीर पर चढ़कर त्वचा से खून को चूसते हैं।

परजीवी से होने वाले रोगों के प्रमुख लक्षण :

रोगी, कमजोर एवं अधिक उम्र के ऐसे पशु जिनको समुचित पौष्टिक तत्व प्राप्त नहीं होते हैं, ये आसानी से परजीवी रोगों विशेषतः अन्तः परजीवी से ग्रसित हो जाते हैं। अधिकतर पशु शरीर में परजीवी की उपस्थिति के बावजूद भी स्पष्ट लक्षण प्रदर्शित नहीं करते हैं। अत्यधिक रूप से परजीवी से प्रभावित होने की अवस्था में उनका उत्पादन कम होने लगता है एवं वह धीरे–धीरे कमजोर पड़ते जाते हैं। बहुत अधिक परजीवी होने पर पशु की मृत्यु तक हो जाती है।

पशु के शरीर के ऊपर, बालों को हटाने पर त्वचा की जाँच द्वारा बाह्य परजीवी को देखा जा सकता है। परन्तु अन्तः परजीवी की पहचान लक्षण के आधार पर ही संभव है। ऐसी स्थिति में किसान के समस्त पशुओं में से अधिकतर द्वारा रोगों के लक्षण प्रदर्शित करना जैसे दस्त लगना, पशु का भार कम होना, धीरे–धीरे कमजोर पड़ना, दुग्ध उत्पादन आदि कम होना, कभी–कभी कुछ अन्तः परजीवी जैसे फीताकृमि सम्पूर्ण रूप से या उनका कुछ भाग पशु के मल के साथ बाहर आते हैं जिसको ध्यानपूर्वक देखने पर कुछ अन्तः परजीवी रोगों का निदान किया जा सकता है।

परजीवी रोगों से बचाव हेतु निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिये :

1. पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले में पशुओं को रखना चाहिए।
2. पशुगृह की समुचित साफ–सफाई प्रतिदिन की जानी चाहिए।
3. पशुओं को साफ, स्वच्छ पानी एवं संतुलित आहार दिया जाना चाहिए।
4. पशुओं के बाह्य परजीवी नियंत्रण हेतु चिकित्सक को दिखाना चाहिए एवं उसके परामर्श के अनुसार प्रायः बरसात के मौसम के पूर्व अर्थात् मई–जून माह में एवं बरसात के मौसम के पश्चात अर्थात् नवम्बर या दिसम्बर माह में समस्त पशुओं को चिकित्सक द्वारा दी गई दवा से नहलाना चाहिए एवं उसी दिन पशु गृह या पशु बाँधने के स्थान पर भी दवा का छिड़काव किया जाना चाहिए, ताकि बाह्य परजीवी सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो सकें। हाथ से निकाली गई किल्लियों को तुरन्त मार देना चाहिए नहीं तो यह पुनः पशु के शरीर में जा सकती है।
5. पशुओं में अन्तः परजीवी रोगों के उपचार एवं बचाव हेतु समस्त पशुओं को चिकित्सक को दिखाना चाहिए एवं उसके परामर्श के अनुसार अप्रैल–मई, अगस्त–सितम्बर एवं दिसम्बर–जनवरी माहों में दवा को पिलाना चाहिए ताकि रोगी पशु एवं ऐसे पशु जिनमें रोग के लक्षण प्रदर्शित नहीं हो रहे हों उनके शरीर में अन्तः परजीवी को समाप्त किया जा सके। अन्तः परजीवी रोगों से बीमार, लक्षण प्रदर्शित पशुओं को तीन सप्ताह (21 दिन) पश्चात पुनः चिकित्सक को दिखाना चाहिए एवं उनकी सलाह के अनुसार ही दवा की एक खुराक और पिलाना चाहिए पशुओं के परजीवी से बचाव एवं उपचार से पशुओं में मृत्युदर कम होती है एवं उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है। जिससे किसानों को बहुत आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

मुख्य अन्तः परजीवी एवं उनसे होने वाले मुख्य रोग :

यकृत कृमि : यकृत कृमि, जुगाली करने वाले पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी के यकृत विशेषतः पित्त नली में पाये जाते हैं। ये पत्ती के समान लम्बे एवं चपटे होते हैं जो कि यकृत को क्षति पहुँचाते है। यह बीमारी उन गाय, भैंस, भेड़, बकरियों में अधिकतर देखने को मिलती है जो कि तालाब या नदी नाले के पास पानी के भराव वाले स्थान पर चरने हेतु जाते हैं।

इस कृमि से रोगी पशु में प्रदर्शित मुख्य लक्षण पशु की बढ़त एवं उसके उत्पादन में कमी आना, निचले जबड़े के मध्य सूजन का आना, पेट में दर्द रहना, पशु में खून की कमी अर्थात एनीमिया होना एवं कभी–कभी अचानक पशु की मृत्यु होना।

गोलकृमि : ये गोलकृमि गाय, भैंस, भेड़, बकरी, कुत्तों आदि के छोटे बच्चों में अधिकांशतः पाये जाते हैं।

फीताकृमि : फीताकृमि के लार्वा से पशु के मस्तिष्क या रीढ़ की मुख्य नाड़ी में गांठ बनने से गिड नामक रोग हो जाता है। यह रोग भेड़ एवं बकरियों में अधिकांशतः देखने को मिलता है।

प्रारम्भिक स्तर पर पशु अनमना रहकर कम खाने लगता है एवं गोल–गोल घूमने लगता हैं। पशु की मांसपेशियों में अनायास संकुचन या ऐंठन आती है। धीरे–धीरे कम दिखने लगता है या एक आँख से पूरी तरह अंधा हो जाता है। पशु सिर को एक ओर झुकाता है एवं गोल–गोल घूमता है। छोटे बच्चों में सिर के एक भाग में बाहरी और मुलायम गाँठ बनती है यदि यह गाँठ, रीढ़ की मुख्य नाड़ी में बनती है तो पशु में पेरालिसिस भी हो जाता है। इस रोग से दीर्घकालीन संक्रमण रहने पर पशु मर भी सकता है।

आमाशय कृमि

यह कृमि मुख्य रूप से गाय, भैंस, भेड़, बकरियों में उनके आमाशय में देखने को मिलते है। एक वर्ष की उम्र तक के पशुओं में यह रोग मुख्यतः देखा जा सकता है।

पशु को दस्त लगने से धीरे–धीरे पशु कमजोर पड़ता जाता है एवं उसका शारीरिक भार भी कम होता जाता है। कभी–कभी पशु में खून की कमी से एनीमिया भी देखने को मिलता है।

नेजल वोटस

यह बकरी एवं भेड़ों में आर्थिक महत्व की बीमारी है जो कि मुख्यतः गर्मी के दिनों में देखी जा सकती है।

इस रोग से प्रभावित पशु अपने सिर को बार–बार झटकता है उसे सांस लेने में काफी तकलीफ होती है, पशु बेचैनी महसूस करता है, खाना कम खाने लगता है। उसके शारीरिक वजन में भी कमी आती है।

अन्तः परजीवी से बचाव व उपचार

अन्तः परजीवी से बचाव हेतु पशुगृह को साफ व स्वच्छ रखना चाहिए। पशु को साफ, स्वच्छ पानी एवं संतुलित आहार दिया जाना चाहिए। एक ही पशुगृह में झुण्ड में पशुओं को नहीं रखना चाहिए एवं समय–समय पर समस्त पशुओं को अन्तःपरजीवी हेतु दवा पशु चिकित्सक द्वारा पिलाई जानी चाहिए।

बाह्य परजीवी

जूँ एवं किल्लियाँ

कुछ परजीवी कीटाणु पशु के शरीर पर स्थाई रूप से एवं कुछ परजीवी अस्थाई रूप से रहते है जिससे पशु के शरीर में खुजली महसूस होती है, पशु कम खाता है एवं अनमना रहता है। खून के चूसे जाने से पशु के शरीर में खून की कमी (एनीमिया) हो जाती है। पशु धीरे–धीरे कमजोर पड़ता जाता है। कुछ विशेष प्रकार की किल्लियाँ, विभिन्न रोगों के कीटाणुओं, जीवाणुओं एवं विषाणुओं को भी बीमार पशु से स्थानान्तरित करके स्वस्थ पशु के खून में डाल देती हैं।

उपचार

किल्लियों को हाथ से भी पशु के शरीर से निकाला जा सकता है। परन्तु हाथ से निकालने पर उन्हें तुरन्त ही मार देना चाहिए अन्यथा ये पुनः पशु के शरीर पर चढ़ जाते हैं। शरीर पर बहुत अधिक संख्या में परजीवी होने पर इनके निदान हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से दवा का घोल तैयार करके पशुओं के शरीर मे घोल को लगाने से किल्लियाँ एवं जूँ मर कर शरीर से नीचे गिर जाते है एवं चिकित्सक की सलाह से खाने की दवा भी दी जा सकती है।

माइट्स

माइट्स पशुओं में खुजली रोग फैलाते है। माइट्स सूक्ष्म परजीवी होते हैं एवं नंगी आंखों से नहीं देखे जा सकते हैं। इन्हें देखने के लिये सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग किया जाता है। ये पशु की त्वचा के अन्दर घुसकर उसमें सुरंग बनाते हैं जिससे त्वचा रोग स्केबीज फैलता है।

पशु की प्रभावित त्वचा पर खुजली होती है। प्रभावित त्वचा सूखी व सख्त हो जाती है वहां के बाल झड़ जाते हैं। खुजली होने से पशु उस भाग को पैर, मुँह या किसी सख्त स्थान से रगड़ता है एवं खुजलाने से बैचेन रहता है, चारा कम खाता है और धीरे–धीरे कमजोर पड़ता जाता है।

उपचार

चिकित्सक द्वारा कुछ इंजेक्शन पशु के शरीर में लगाने या नहलाने की दवा से उपचार संभव है।

मार्गदर्शन : डॉ. पी.के. घोष, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी–284003 उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0510–2730666, फैक्स : 0510–2730833, www.igfri.res.in
उत्प्रेरित एवं समर्थित : साइंस फॉर इक्विटी एम्पावरमेन्ट एन्ड डेवलपमेन्ट विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
Darpan Printers & Lamination